साहित्य अकादेमी

25 मई 2012

लेखक से भेंट

नरेन्द्र मोहन

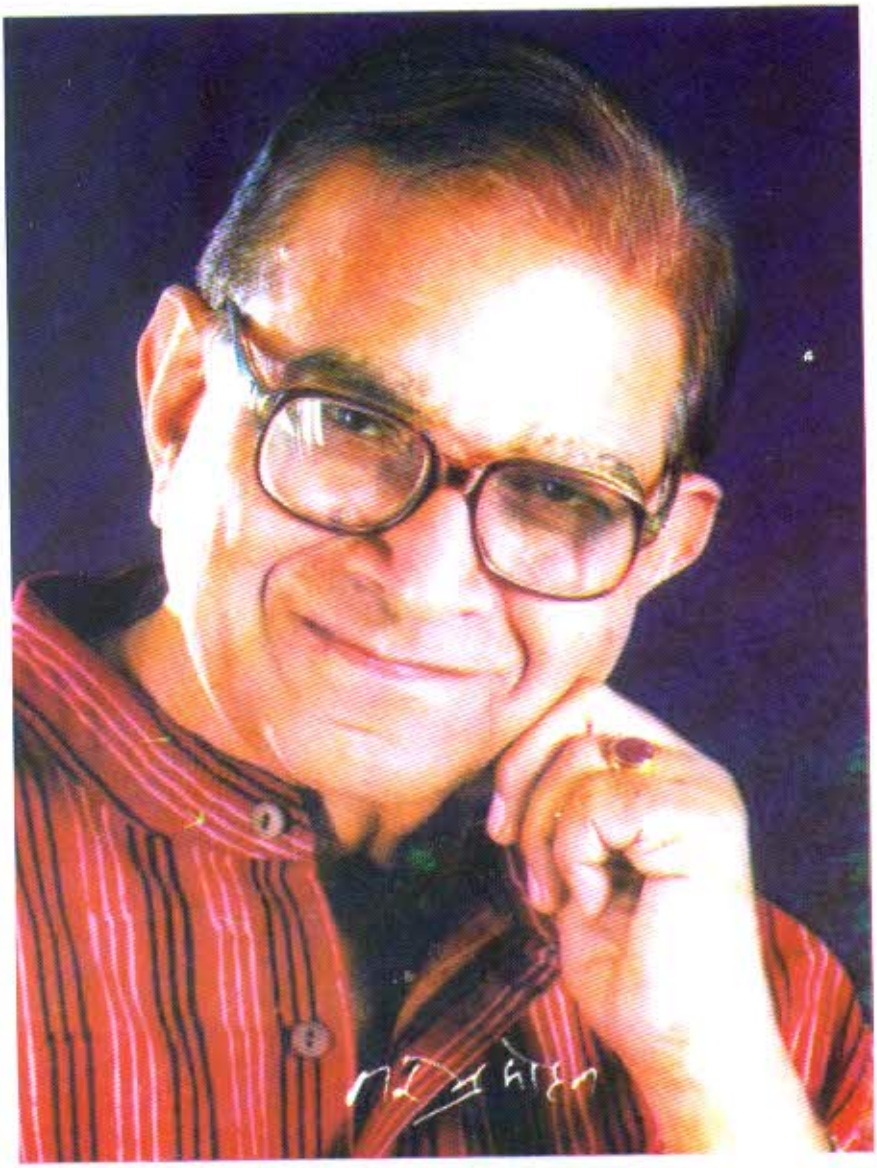

एक साथ कई साहित्यिक विधाओं और काव्य-माध्यमों में सक्रिय और सृजनशील रहने वाले नरेन्द्र मोहन साहित्य के कई नए रूपों और दिशाओं की तरफ़ बढ़ते रहे हैं। अपनी हर कृति के साथ वे अपने ही बनाए रास्ते के रूढ़ि बनने से पहले ही उससे बाहर आने का प्रयत्न करते हैं और नए प्रयोगों की राह पर निकल पड़ते हैं। इस दृष्टि से उनकी कविताएँ और नाटक, गद्य-कृतियाँ और आलोचनात्मक पुस्तकें, डायरी रचनाएँ, संस्मरण तथा आत्मकथा पाठकों को एक नए आस्वाद और रचाव में ढली महसूस होती हैं। कविता को वैचारिक अनुभूति से स्फूर्त करने वाले कवियों और नए नाटक की परिकल्पना को ठोस आधार देने वाले नाटककारों में वे शुमार किए जाते हैं। आज की ज़िन्दगी के बहुस्तरीय यथार्थ को कलात्मक अंदाज़ में पेश करने वाले गद्य शिल्पियों के तौर पर भी वे ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं।

कई काव्य-प्रवृत्तियों और आन्दोलनों के घमासान में वे कविता लिखते रहे हैं। हर दौर में अपने समय की कविता में प्रखरता से हस्तक्षेप करते हुए (कविता-संग्रह : *इस हादसे में*, 1975; *सामना होने पर*, 1979) उन्होंने काव्यात्मक संवेदना और विचार की नई दिशाएँ इस तरह खोली हैं कि स्थिति का व्यंग्य और उसकी विसंगति उजागर होती गई है। संवेदना और विचार को एक-दूसरे में तानते हुए वे संघर्ष और विद्रोह की भूमिका में (कविता-संग्रह : *एक अग्निकांड जगहें बदलता* 1983; *हथेली पर अंगारे की तरह* 1990) उतरते रहे हैं। एक तरफ़ परिस्थिति, इतिहास और वर्तमान का तनाव और दूसरी तरफ आज की परिस्थिति के संदर्भ में कठपुतली, चित्र और नृत्य जैसी कलाओं के भीतरी आशयों, प्रतीकों और मेटॉफरों को वे कविता में (कविता-संग्रह : *एक सुलगती ख़ामोशी*, 1997; *एक खिड़की खुली है अभी*, 2006) विन्यस्त करते गए हैं। यह एक नया सौंदर्यात्मक एडवेंचर है (कविता-संग्रह : रंग आकाश में शब्द, 2012)—एक बेहद जटिल रचना-संसार में अंतर्प्रवेश, जिसकी ध्वनियाँ-अंतर्ध्वनियाँ आने वाले कल में भी सुनी जा सकेंगी।

एक लंबी कविता-यात्रा में लिखी गईं उनकी लंबी कविताएँ (*एक अग्निकांड जगहें बदलता, एक अदद सपने के लिए, खरगोश-चित्र और नीला घोड़ा, प्रिय बहिणा*) काल और इतिहास को, 'आत्म' की धुरी पर कुछ इस तरह तानती हैं कि बोध के स्तर पर कोई फाँक नज़र नहीं आती। इन लंबी कविताओं को जिस शिल्प-प्रतिभा से सँभाला गया है, उसे देखते हुए इन्हें लंबी कविता के विशिष्ट मॉडलों के तौर पर भी पेश किया जाता रहा है।

नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों (*कहैं कबीर से अभंग गाथा तक और मि. जिन्ना से मलिक अंबर तक*) एक लंबी रंग-यात्रा तय की है और आज भी वे नए-नए रंग-प्रयोग करने में जुटे हुए हैं। नाटक में वे नई राहों की तरफ़ बढ़े हैं, साथ ही सर्जनात्मक विचारों और आधुनिक यथार्थ का समन्वय भी करते रहे हैं। नाटकों में उन्होंने मानवीय संबंधों और समस्याओं को आत्मीयता और अंतरंगता के साथ भावप्रवणता, वैचारिक सघनता और सर्जनात्मक संश्लिष्टता से प्रस्तुत किया है। समकालीन परिस्थिति और परिवेश के किसी-न-किसी प्रसंग या संदर्भ को स्पर्श करने वाले उनके नाटक विषय की व्यापकता, संवेदना की गहराई और शिल्प की सादगी लिए हुए हैं। इन नाटकों में इतिहास-बोध समसामयिकता से स्पंदित है। निजी के ज़रिए राजनीति की, स्मृति के ज़रिए इतिहास की या एक त्रासदी के विभिन्न रूपों और स्तरों की बेहद नाटकीय और प्रभावशाली प्रस्तुति को देखना हो तो *मि. जिन्ना* और मंच अँधेरे में पढ़ जाइए। स्थितियों और पात्रों (*नो मैंस लैंड, कलंदर*), कई बार मुख्य कथा के साथ लोक कथा (*सींगधारी, हद हो गई यारो*) का संयोजन वे इस कौशल से करते हैं कि कथा और काल के इकहरे संकल्प ख़ुद-ब-ख़ुद टूटते जाते हैं। उनके नाटक प्रसिद्ध रंग-निर्देशकों द्वारा खेले जाकर और प्रकाशित होने पर व्यापक चर्चा और वाद-विवाद का विषय बने हैं। रंग और शब्द एक-दूसरे को प्रकाशित-प्रतिभासित करते हुए,

उनके नाटकों में साथ-साथ हैं। रंग-संगीत और रंगभाषा कैसे नाट्य सौन्दर्य में ढलती है, इसे *अभंग-गाथा* से और भाषाहीनता के भीतर से भाषा की तलाश कैसे संभव है, इसे *मंच अँधेरे में* नाटकों से बेहतर पहचाना जा सकता है।

सभी नाटकों में वस्तुगत नवीनता और मौलिकता, कथ्य में संघर्ष और तनाव की उपस्थिति, अंतर्द्वंद्व की तीव्रता, भावनात्मक तथा वैचारिक टकराहट की स्थितियों-परिस्थितियों के घात-प्रतिघात, संवादों के आरोह-अवरोह, जीवंत चरित्रों और रोचक घटना-प्रसंगों का विधान देखा जा सकता है। शब्द और रंगकर्म के बेजोड़ विन्यास को देखते हुए कहा जा सकता है कि वे कुशल रंग-शिल्पी हैं।

नरेन्द्र मोहन की डायरी रचनाएँ— *साथ साथ मेरा साया* और *साए से अलग* उनके लम्बे आत्म-संघर्ष और रचना संघर्ष के ऐसे दस्तावेज़ हैं, जिनमें उनका समय करवटें लेता महसूस किया जा सकता है। निजी पारिवारिक बातें, सामाजिक-राजनीतिक हालात, साहित्यिक हलचलें यहाँ परस्पर गुथी हुई हैं। तेजी से भागते समय की आवाजें, उन के साथ जुड़ी सोच और साहित्यिक सरगर्मियाँ, आत्मगत साक्ष्य के साथ इन डायरियों में अंकित हैं। लेखकीय मन के सपनों-सरोकारों-उलझावों, सुखों-संतापों, रहस्यों-कुंठाओं को ये रचनाएँ बड़ी बेबाकी से खोलती चलती हैं। बाहर और अंदर का संघर्ष यहाँ बड़ा दिलचस्प है। निश्चय ही, ये बंद नहीं, कई तरफ़ खुलती हुई रचनाएँ हैं। इसी तरह उनकी आत्मकथा का पहला खंड *कमबख़्त निंदर* और संस्मरणात्मक कृति *फ्रेम से बाहर आतीं तस्वीरें* अपने समय का एक नया पाठ रचती दिखती हैं।

नरेन्द्र मोहन के लिए कविता, नाटक, डायरी, आलोचना और अन्य कला माध्यम एक-दूसरे से विच्छिन्न नहीं हैं, एक अंतर्वर्ती रचना-सूत्र में बँधे-बिंधे हुए हैं। काव्यानुभूति की बुनावट में वैचारिक अंतर्क्रिया को रेखांकित करने में, नई से नई प्रवृत्तियों और सरोकारों के साथ आलोचनात्मक विवेक को विकसित करने वाले आलोचकों में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। लंबी कविता को उन्होंने काव्यालोचना के केंद्र में लाने की पहल की है। कविता, कहानी, उपन्यास और विभाजन जैसे मुद्दों को लेकर वे नई विधियों से उनके विश्लेषण में और नए विमर्शों की खोज में संलग्न रहे हैं। विद्रोह और साहित्य के रिश्तों के विश्लेषण की दृष्टि से उनकी किताबें चर्चा में रहीं हैं। उनकी संपादित पुस्तकों में *लंबी कविता का रचना-विधान* 1977, *मंटो की कहानियाँ* 1990, तथा *विभाजन : भारतीय भाषाओं की कहानियाँ : खण्ड एक-दो* 2009, उनके काम के महत्त्व और संपादन प्रतिभा की वजह से पढ़ने-लिखने वाले लोगों की स्मृति में दाख़िल हो चुकी हैं।

नरेन्द्र मोहन की कृतियाँ सृजनात्मकता की लय में बँधी हुई हैं। उनका सृजन एक पेड़ की तरह है जो बाहर से हवा-पानी लेता हुआ फलता-फूलता है, लेकिन जिसकी जड़ें बहुत गहरे मिट्टी में, ज़मीन में, समाज में, उनके आत्म में धँसी हुई हैं! इस लय को पत्तों, टहनियों और तने के रूप में नहीं, संपूर्ण रूप में ही समझा जा सकता है।

भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, देवेन्द्र इस्सर के साथ

प्रमुख कृतियाँ

कविता-संग्रह

इस हादसे में	शारदा प्रकाशन, दिल्ली	1975
सामना होने पर	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	1979
एक अग्निकांड जगहें बदलता	अनन्य प्रकाशन, दिल्ली	1983
हथेली पर अंगारे की तरह	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1990
संकट दृश्य का नहीं	शारदा प्रकाशन, दिल्ली	1993
एक सुलगती खामोशी	आस्था प्रकाशन, दिल्ली	1997
एक खिड़की खुली है अभी	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2006
नीले घोड़े का सवार	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2008
रंग आकाश में शब्द	किताब घर प्रकाशन, दिल्ली	2012

नाटक

कहै कबीर सुनो भाई साधो	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1988
सींगधारी	जगतराम एण्ड सन्ज, दिल्ली	1988
कलन्दर	परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली	1991
नो मैंस लैंड	विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली	1994
अभंग गाथा	जगतराम एण्ड सन्ज, दिल्ली	2000
मिस्टर जिन्ना	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2005
हद हो गई, यारो	किताब घर, दिल्ली	2010
मंच अँधेरे में	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	2011
मालिक अंबर	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2011

डायरी : संस्मरण

साथ-साथ मेरा साया (डायरी)	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	2002
साए से अलग (डायरी)	नमन प्रकाशन, दिल्ली	2010
फ्रेम से बाहर आती तस्वीरें (संस्मरण)	नमन प्रकाशन, दिल्ली	2010

जीवनी

मंटो ज़िन्दा है	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	2012

औरंगाबाद में डॉ. पानतावणे तथा अन्य कवि मित्रों के साथ

आलोचना

आधुनिक हिन्दी कविता में अप्रस्तुत विधान	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1972
आधुनिकता और समकालीन रचना-सन्दर्भ	आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली	1973
कविता की वैचारिक भूमिका	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली	1978
समकालीन कहानी की पहचान	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1978
आधुनिकता के सन्दर्भ में हिन्दी कहानी	जयश्री प्रकाशन, दिल्ली	1978
पंजाब के लोक गाथा-गीत	पब्लिकेशन डिविजन, दिल्ली	1979
Dimensions of Protest in Literature (Eng.)	Ajanta Publication, Delhi	1985
शास्त्रीय आलोचना से विदाई	प्रतिमान प्रकाशन, दिल्ली	1991
समकालीन कविता के बारे में	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1994
रचना का सच	संजय प्रकाशन, दिल्ली	1996
विभाजन की त्रासदी : भारतीय कथा-दृष्टि	ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	2008

रचनावली

नरेन्द्र मोहन रचनावली (आठ खंडों में)	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2006

प्रमुख घटनाएँ एवं सम्मान

1935	:	जन्म 30 जुलाई, 1935, लाहौर।
1940	:	लाहौर कैंट के प्राइमरी स्कूल में दाख़िला। कई महीनों के लिए गूँगे हो गए थे।
1945	:	तीन साल बड़े भाई जोगिन्दर का निधन। सन्नाटे और चीख़ का पहला अनुभव।
1947	:	विभाजन। 19 अगस्त—लाहौर से अमृतसर शरणार्थी शिविर में। अक्तूबर में पालमपुर। एक साल की भयंकर बीमारी के चलते स्कूल हमेशा के लिए छूट गया।
1952	:	अम्बाला में प्राइवेट तौर पर मैट्रिक। उसी साल जी.एम. एन. कॉलेज, अंबाला में प्रवेश।
1956	:	बी.ए. (आनर्स), पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम।
1958	:	हिन्दी साहित्य में एम.ए.। पत्रिकाओं में कविताएँ, लेख प्रकाशित।
1959-65	:	पंजाब के विभिन्न कॉलेजों में अध्यापन।
1962	:	29 मई, अनुराधा के साथ विवाह।
1964	:	12 फ़रवरी, सुमन (बेटी) का जन्म।

तीन चौथाई सदी पार करने पर लोकार्पण उत्सव/संगोष्ठी में हरीश नवल, सतिन्दर सिंह नूर, जोगिन्दर पाल, रामदरश मिश्र, देवेन्द्र इस्सर, महीप सिंह के साथ

1966	:	पंजाब यूनिवर्सिटी से आधुनिक हिन्दी कविता पर पी-एच.डी। 4 दिसम्बर, अमित (बेटे) का जन्म।
1967	:	10 जनवरी, खालसा कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में नियुक्ति।
1969	:	6 जनवरी, मनीषा (बेटी) का जन्म।
1976	:	*इस हादसे में* (कविता-संग्रह) पर पंजाब का कृति सम्मान।
1978	:	*कविता की वैचारिक भूमिका* पर हरियाणा साहित्य अकादेमी का पुरस्कार।
1979	:	*समकालीन कहानी की पहचान* पर भारत सरकार का अखिल भारतीय सम्मान।
1980	:	*आधुनिकता के सन्दर्भ में हिन्दी कहानी* पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान का सम्मान।
1980-84	:	महासचिव—भारतीय लेखक संगठन।
1988	:	हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर नियुक्ति।
1989	:	*कहै कबीर सुनो भाई साधो* नाटक पर हिन्दी अकादेमी, दिल्ली का सम्मान।
1992	:	26 कड़ियों के एक सीरियल 'उजाले की ओर' का लेखन, ऋषिकेश मुखर्जी के निर्देशन में प्रसारण-प्रदर्शन।
1994	:	9 जनवरी, इंडियन स्कूल, मस्कत में प्रायोजित एक संगोष्ठी में पाँच व्याख्यान।
1995	:	पंजाब का सर्वोच्च 'शिरोमणि साहित्यकार सम्मान'।
1996	:	भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला—मंटो पर आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 'विभाजन और मंटो' पर व्याख्यान।
1998	:	विजिटिंग प्रोफेसर : भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला।
1999	:	'साहित्य भूषण सम्मान', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
2000	:	विजिटिंग प्रोफेसर, डॉ. बाबा साहब आंबेडकर मराठवाडा यूनिवर्सिटी, औरंगाबाद।
2002	:	18 जनवरी, पत्नी का देहांत।
2003	:	'साहित्यकार सम्मान', हिन्दी अकादेमी, दिल्ली।
2004	:	लाहौर—वर्ल्ड पंजाबी कान्फ्रेंस में भागीदारी।
2005	:	20 जून, *मि. जिन्ना* नाटक के मंचन पर प्रतिबंध।
2005-7	:	अध्यक्ष, भारतीय लेखक संगठन।
2007	:	गोवा यूनिवर्सिटी, गोवा में विजिटिंग प्रोफेसर।
2008	:	रिसरजेंस ऑफ़ सूफ़ीज्म—वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस, गुजरात (पाकिस्तान) में भागीदारी।
2008	:	नट सम्राट का 'सर्वश्रेष्ठ नाटककार सम्मान'।

गुजराती-हिन्दी लेखकों के साथ (अहमदाबाद)